अमिताश ओझा

क्या यह दुनिया वैसी ही है जैसी हमें दिखती है?

मेरे पिछले लेख (फरवरी अंक में) में मैंने सवाल पूछने के बारे में चर्चा की थी। इस बार शुरुआत एक सवाल से ही करते हैं – यह दुनिया क्या है और कैसी है? तुम कहोगे यह भी कोई सवाल हुआ! अरे दुनिया जैसी है वैसी है। पर यह अहम सवाल सालों तक लोगों के बीच घूमता रहा। अलग-अलग समय में अलग-अलग लोगों ने कई तरह से इसके जवाब दिए। देखें...

दुनिया है क्या?

क्या यह दुनिया वैसी ही है जैसी हमें दिखती है या कुछ और है? क्या यह हमेशा से ऐसी ही थी? क्या यह कभी बदलेगी? ऐसे कई सवाल हैं जिन्हें हज़ारों साल से लोग पूछ रहे हैं। पर आज तक इनका कोई ऐसा जवाब नहीं मिला जिसे सभी सही मानते हों। थेल्स ने सबसे पहले जवाब देने की कोशिश की और कहा कि दुनिया का मुख्य तत्व पानी है, पाइथागोरस के अनुसार सत्य सिर्फ संख्याएँ हैं। भारत में आमतौर पर माना जाता था कि दुनिया के पीछे का सत्य ब्रह्म है।

सोचो हमारे लिए इस दुनिया में पेड़ हैं, पौधे हैं, पर्वत, झरने हैं, नदियाँ हैं। पर क्या ये सचमुच हैं या फिर ये इसलिए हैं क्योंकि हम उन्हें वैसा देखते हैं। क्या सभी प्राणियों के लिए यह दुनिया वैसी ही है जैसी हमें दिखती है। बकरियों के लिए, चींटियों के लिए या फिर अन्य एक-कोशकीय जीवों के लिए। या फिर उन जीवों के लिए जो हम मनुष्यों से बिल्कुल अलग हैं जैसे चमगादड़। कहते हैं चमगादड़ रंग नहीं देख सकते। खाना और अँधेरे में रास्ता ढूँढने के लिए वे ध्वनि तरंगों का इस्तेमाल करते हैं।

क्या हम सबकी दुनिया एक-सी है?

हमने पढ़ा है कि हम जो देखते हैं उसका हमारे मस्तिष्क में एक द्विआयामी चित्र बनता है। फिर सवाल यह है कि हम उसे त्रिआयामी कैसे देखते हैं? हमारा मस्तिष्क उन्हें त्रिआयामी बनाता है। मतलब यह है कि हमारे मस्तिष्क में यह क्षमता है कि वह एक चित्र को त्रिआयामी बना दे। इसका

मतलब यह है कि दो चीज़ों के बीच की दूरी जो हम देखते हैं वह हमारे मस्तिष्क ने बनाई है। कुत्तों और बिल्लियों के मस्तिष्क में ऐसी काबिलियत नहीं है कि वे द्विआयामी चित्रों को त्रिआयामी बना सकें। तो इसका मतलब यह हुआ कि उन्हें यह दुनिया एक चित्र की तरह नज़र आती होगी। जैसे कि किसी चित्र में चीज़ों के बीच की दूरी समझ में नहीं आती है। यदि ऐसा है तो उनकी दुनिया में दूरियाँ नहीं होंगी। इसका मतलब उनकी दुनिया और हमारी दुनिया अलग-अलग है। यह तो एक उदाहरण है। तो सोचो क्या यह सम्भव है कि हम सब के लिए दुनिया अलग-अलग है? अगर हाँ, तो सवाल यह है कि फिर असली दुनिया क्या है?

उसकी या इसकी, दुनिया असली किसकी?

आजकल हो रहे शोधों से पता चलता है कि हमारी दुनिया हमें वैसी ही दिखती है जैसा हम उसे बनाते हैं। और इसे बनाने का काम हमारी इन्द्रियाँ और हमारा मस्तिष्क मिलकर करते हैं।

एक छोटा-सा उदाहरण लेते हैं। एक लाल रंग का सेब है। तुम कहोगे कि एक चीज़ है जो लाल है और मैं उसे सेब कहूँगा जिसमें सुगन्ध है और जो स्वादिष्ट है। वो सेब ही है इसके लिए हमें और क्या प्रमाण चाहिए? पर सोचो अगर सेब को किसी ऐसे कमरे में रख दिया जाए जिसमें हरे रंग का प्रकाश है तो? तो सेब का रंग बदल जाएगा और वो हमें काला दिखाई देगा। पर सेब को

तो लाल होना चाहिए! इसका मतलब यह है कि हम सेब को जिस भी रंग का देखना चाहें वह दिखेगा बस उसके आसपास थोड़ा बदलाव करना होगा। तो क्या सेब का अपना कोई रंग नहीं है? रंग है तो कहाँ? हमारे दिमाग में? वैज्ञानिक कहते हैं कि दिमाग का वी-4 भाग हमें चीज़ों के रंग दिखाता है। दिमाग के और दूसरे भाग अपना-अपना काम करते हैं जिनके बारे में हम बाद में कभी बात करेंगे।

कोई बताए कि सेब है भी कि नहीं?

चलो मान लिया कि रंग हमारे दिमाग में हैं पर सेब तो दुनिया में है। सेब की सुगन्ध और उसका स्वाद तो हैं। बर्कले नाम के एक दार्शनिक ने ऐलान किया कि दुनिया में कोई भी चीज़ नहीं है। हम अपने दिमाग में जो कुछ बनाते हैं

वही देखते हैं। उनका कहना था कि जिन चीज़ों को हम महसूस नहीं करते वे हैं ही नहीं। जिन चीज़ों को हम अनुभव करते हैं वे हमारी इन्द्रियों पर निर्भर हैं। इन्द्रियों द्वारा भेजे गए सन्देश से हमारा दिमाग उन्हें बनाता है। यानी सेब का रंग ही नहीं उसकी सुगन्ध और उसका स्वाद भी हमारी इन्द्रियों पर निर्भर है। तुमने देखा होगा कि जुकाम होने पर कोई भी गन्ध नहीं आती। अगर किसी को बचपन से ही जुकाम हो तो उसके लिए दुनिया में गन्ध नाम की कोई चीज़ होगी ही नहीं। यही स्वाद के साथ भी होता है।

आइडियलिज़्म व रियलिज़्म

क्या अनाप-शनाप बोले जा रहा हूँ? यही सोच रहे हो ना तुम। ऐसा थोड़े ही हो सकता है कि दुनिया में कुछ है ही नहीं। यदि ऐसा होता तो जो हम देखना चाहते उसे सोच लेते! मेरे पास कार नहीं है, हम सोचते और कार आ जाती। है ना? सोचो, सोचने में कोई बुराई नहीं है।

बर्कले के इस विचार को आइडियलिज़्म (idealism) कहते हैं और जो इस विचार को नहीं मानते हैं और कहते हैं कि चीज़ें वास्तव में हैं उन्हें रियलिस्ट कहते हैं और इस विचार को रियलिज़्म (realism)।

फिनोमेना व नौमेना

एक और दार्शनिक काण्ट ने भी इस सवाल के जवाब के लिए एक सुझाव दिया। उसने कहा कि दुनिया में चीज़ें हैं पर वे क्या हैं, कैसी हैं यह हमें नहीं पता। हो सकता है कि हम जो देखते हैं चीज़ें वैसी ही हों पर यह भी हो सकता है कि एकदम अलग हों। इसका हमें कभी पता नहीं चल सकता। हम चीज़ों को जिस रूप में देखते हैं उसे उन्होंने फिनोमेना (phenomena) कहा और चीज़ें वास्तव में जैसी हैं उसे उन्होंने नौमेना (noumena) कहा। उनका मानना था

कि हम जो अनुभव करते हैं वो हमारी कल्पना है। पर हम इंसानों में कल्पनाशक्ति समान है इसलिए अधिकतर चीज़ों का अनुभव एक जैसा ही होता है। नतीजा यह कि हम मान लेते हैं कि कोई वस्तु है और वो वैसी ही है जैसी हम सब को दिखती है पर वास्तव में ऐसा है नहीं।

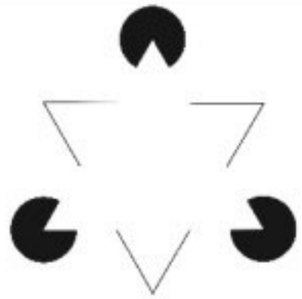

जैसे यह सफेद त्रिभुज वास्तव में है नहीं पर हमने इसे बनाया है तो क्या यह सम्भव नहीं कि जो दुनिया हम देखते हैं वो भी हमारी ही बनाई हुई हो।

प्लेटो का आइडिया

दुनिया के अस्तित्व पर और भी कई लोगों ने कई बार सवाल उठाए हैं। प्लेटो ने 2500 साल पहले कहा कि हम जिन चीज़ों को देखते हैं वे सिर्फ बुरी नकल हैं। वास्तव में सच्चाई कुछ और है। इस सत्य को उन्होंने आइडिया (Idea) कहा जो किसी और दुनिया में है और इस दुनिया की सारी वस्तुएँ उनकी नकल मात्र हैं। मतलब यह कि यहाँ जो कुर्सी हम देखते हैं वह आइडिया के दुनिया की कुर्सी की बुरी नकल है।

हमारे सवाल

ऐसा नहीं है कि ये सवाल सिर्फ विदेशों में ही लोगों ने उठाए हैं। हमारे देश में भी लोगों ने यह सवाल पूछा है और जवाब देने की कोशिश की है। भगवान बुद्ध ने दुनिया के बारे में सवाल उठाए। बौद्ध दर्शन के अनुसार यह दुनिया मात्र कल्पना है और सत्य सिर्फ परिवर्तन है।

शंकराचार्य के अनुसार दुनिया भ्रम है। हम जिस विविधता का अनुभव करते हैं वह हमारी अज्ञानता के कारण है। सत्य सिर्फ एक है जिसे उन्होंने ब्रह्म कहा

और कहा कि वास्तव में सब कुछ ब्रह्म है और कोई विविधता नहीं है। जिसे काण्ट ने हमारी क्षमता बताया शंकराचार्य ने उसे हमारी अज्ञानता कहा।

वास्तव में इस सवाल का कोई अन्त नहीं दिखता और शायद लोग कहें कि ऐसे फालतू सवालों से क्या फायदा? पर इन्हीं सवालों ने बताया कि दुनिया में परमाणु हैं, दूरी क्या है, समय क्या है और न जाने कितने ही प्रश्न इस छोटे से सवाल से निकले हैं। दार्शनिकों का काम है सवाल पूछना और वैज्ञानिकों का काम है उन सवालों का जवाब खोजना।

चुआंग जू का सपना

चुआंग जू ने सपना देखा कि वह तितली है और जब वह सोकर उठा उसे यह नहीं पता था कि वह एक मनुष्य है जिसने सपना देखा कि वह एक तितली है या वह एक तितली है जिसने एक सपना देखा कि वह एक मनुष्य है।

होर्खे लुइस बोर्खेस

सभी चित्र: जोएल गिल

FINISHED FILES ARE THE RE- SULT OF YEARS OF SCIENTIFIC STUDY COMBINED WITH THE EXPERIENCE OF YEARS

इन दो पंक्तियों में कितने F हैं? ज़रा फिर से गिनकर देखो।